“विमर्श मंगलाष्टक”

(उल्लाला छंद)

आदिनाथ को कर नमन , जय विमर्श उच्चारिये ।
वंदन करिए भाव से , मंगल चरण पखारिये ॥
भाव सभी मंगल बनें , मंगल कारज कीजिए ।
हटे अमंगल सब यहाँ , गुरु कृपा शिर लीजिए ॥
आदि जहाँ पर हम करें , तब गुरुवर आशीष है ।
हम सब ऐसा मानते , गुरु होता जगदीश है ॥
ब्रम्हा गुरुवर मानकर , लिखे नमन को अब कलम ।
गुरु विमर्श जी कीजिए , मम जीवन में मंगलम् ॥ (1)

गुरु विमर्श है मंगलम् , युग नायक श्री संत हैं ।
चर्या पावन देखते , मोक्ष लक्ष्मी कंत हैं ॥
जहाँ आचरण गंग है , सत्यम के प्रतिविम्ब हैं ।
मोक्ष मार्गी जीव को , बने आज अवलम्ब है ॥
तारण हारे आप है , दिशा ज्ञान प्रतिमान है ।
त्याग सूर्य के पुंज है , मंगल अभियुत्थान है ॥
शरण आपकी तोड़ती , जग नातों का है भरम ।
गुरु विमर्श जी कीजिए , मम जीवन में मंगलम् ॥ (2)

संघ चतुर्विध आपका , समोशरण अनुभाग है ।
वीतरागिता देखकर , हमें धर्म अनुराग है ॥
दिव्य भव्य सब आपका,शिव स्वरूप मनुहार है ।
गुरु विमर्श जी है नमन , वंदन बारम्बार है ॥
वचन आपके है हिती , करते जन कल्याण हैं ।
जीवन को मंगल करें , पावन होते प्राण हैं ।
गुरुवर का दर्शन मिले , सभी टूटते तब अहम् ।
गुरु विमर्श जी कीजिए , मम जीवन में मंगलम् ॥ (3)

संत भाव लिंगी बने , सच्चे गुरुवर आप है ।
वेश दिगम्वर देखते , वीतरागिता माप है ॥
सभी राष्ट्रयोगी कहें , गुरु पुंगव भी मानते ।
श्रमणाचार्या में गिनें , कवि महान पहचानते ॥
धर्म दिवाकर भूप हो , शीत ऋतू में धूप हो ।
भव सागर में तारने , गुरुवर आप अनूप हो ॥
चौथी युग चर्या रहें , करे साधना तप धरम ।
गुरु विमर्श जी कीजिए , मम जीवन में मंगलम् ॥ (4)

काल जयी अब काव्य है , पानी जीवन बूँद है ।
यह तन जो हम देखते , केवल एक फफूँद है ॥
कब मिट जाए बुलबुला , कहते गुरु सटीक हैं ।
दिखी सनातन से सदा, हम सबको यह लीक हैं ॥
गुरु विमर्श का ग्रंथ यह , महाकाव्य का रूप है ।
सदा धरोहर है जगत , युग को बना अनूप है ॥
नमन करूँ इस काव्य को ,लगे हितैषी सच परम ।
गुरु विमर्श जी कीजिए , मम जीवन में मंगलम् ॥ (5)

ग्रंथ अनेकों आपके , प्रवचन शुचि साहित्य है।
टीकाओं के देखते , जिनमें आगम सत्य है॥
काव्य अनेकों जो लिखे ,आतम हित की बात है।
युगों-युगों तक यह अमर ,रहें सदा सौगात है॥
कलम आपकी दे सदा , एक नया चिंतन यहाँ ।
गुरु विमर्श को छोड़कर , श्रावक जाए अब कहाँ॥
प्रवचन में सुनते सदा , कल्याणी वाणी नरम।
गुरु विमर्श जी कीजिए , मम जीवन में मंगलम्॥ (6)

चरण आपके छू सभी , हो जाते हम धन्य हैं ।
कर कमलों आशीष से , जग जाते सब पुन्य हैं॥
करूँ आरती आपकी , अंधकार सब नाश हो।
नव जीवन बगिया खिले , उजला नया प्रकाश हो॥
चरण धूल से रोग भी , सभी शमन हम देखते।
यह "सुभाष" अनुभव किया , और हृदय में लेखते॥
पतित यहाँ पावन बनें , और सुधरते है करम।
गुरु विमर्श जी कीजिए , मम जीवन में मंगलम्॥ (7)

नमन -नमन गुरुवर नमन , स्वीकारो अब दास को ।
चरणों में अर्पण करूँ , भक्ति और विश्वास को॥
हित मित प्रिय है सब वचन, शुभ मय सब संदेश है।
गुरु विमर्श जी आपका , पंथ जिनागम वेश है॥
समरसता की बात कर , सत्य ज्ञान प्रतिविम्ब है।
जैन धर्म के ध्वज तले , आप सत्य अवलम्ब है॥
जिसको भी सानिध्य मिले , दूर करेगा वह वहम्।
गुरु विमर्श जी कीजिए , मम जीवन में मंगलम्॥ (8)

~~~~~~~~~~~~~~~

यह सभी मंगलाष्टक गुरु कृपा हेतु , भक्ति स्वरुप सुखदायी व मंगलकारी है, फिर भी विशेष रुप से –
प्रथम - कार्य प्रारंभ हेतु।
द्वितीय - भ्रमित अवस्था में मार्ग प्रशस्त हेतु।
तृतीय - परिवार एकता व विखराव बचाव हेतु।
चतुर्थ-परिवार में धर्म वृद्धि हेतु।
पंचम - बचपन में बालक में बुद्धि और शिक्षा हेतु।
षष्टम - बालक की उच्च शिक्षा हेतु।
सप्तम -रोग शोक कष्ट निवारण हेतु।
अष्टम - वृद्ध परिजनो के कष्ट निवारण हेतु।
गुरु की भक्ति विशेष की जा सकती है। लेखक की यह अनुभूति है।

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

लेखक / कवि- सुभाष सिंघई , एम० ए० (हिंदी साहित्य)
जतारा (टीकमगढ़) म०प्र० , मोबा० 9584710660